भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 9 | मंगलवार, 26.9.2000 | वार्षिक चंदा : 50

ब्रह्मप्रवाह

गुणातीत ज्ञान के परम रहस्य की महान खोज
'**ब्रह्मज्ञ**' रुपी **पांचवे वेद** की है।
उसके प्रत्यक्ष स्वरुप की पहचान द्वारा
जीवनमुक्ति का पंचम पुरुषार्थ जीतेजी ही सहज और सरल बने
व
दैवी गुणों की बढ़ोतरी हुआ ही करे
यह है अनंत जीवन की अनुपम यात्रा !
नए वर्ष की सुबह से पहले के अंधकार की वजह ढूंढ कर,
जीवन का लेखा-जोखा निकाल कर,
अंतर्दृष्टि करके राग-द्वेष, गुण-अवगुण, आसक्ति-अनासक्ति, सगुण-निर्गुण वगैरह
सभी प्रकार के द्वंद्वों से परे होकर, प्रभुमय ही-दिव्य
जीवन जीने के लिए हिसाब चुकाना पड़ता है।
सच्चे तीव्र आध्यात्मिक अनुभवों के निचोड़ से स्वयं की ओर साधु की दृष्टि रखते हुए
जीवन का यह लेखा-जोखा सभी को प्राप्त हो
और
बाहर महाराज की दृष्टि रखते हुए ऐसे दैवी गुणों से उपलब्ध करा कर
व्यापकरुप से वे सभी के जीवन को समृद्ध करते रहें
और
ऐसी समता, साधुता और सुहृद्भाव की प्याऊ नए वर्ष में जगह-जगह पर बनती हो जाए यही अंतर की अभ्यर्थना !
जीव ब्रह्मरुप होकर भगवान का धारक तो हुआ,
लेकिन पल-पल ऐसी अखंड शांति, सुख और आनंद की जाग्रतता का योग पूर्णता को पाए उसके लिए
अंतःकरण की लापरवाही और पुरानी आदतोंरुपी स्वभाव व ग्रंथियाँ पिघाल कर महातम प्रभुओं के साथ रसबस होकर
हम ऐसा दिव्य जीवन जीते हो जाएं यही नए वर्ष पर गुरुचरणों में सभी के लिए प्रार्थना है।

– प.पू. काकाजी महाराज
अक्तुबर, 1971

दीपावली के शुभ अवसर पर.....

यह सारा महीना महोत्सवों और पर्वों का माना जाता है व इन दिनों–
पूरे वर्ष के हिसाब की लेन-देन एवं विविध भावनाओं के समन्वय का लेखा-जोखा निकालने के लिए
मांगलिक प्रसंग योजे जाते हैं।
और...
बीते वर्ष के अंत में नए वर्ष की सुप्रभात के लिए हमारे जीवन का लेखा-जोखा निकाल कर,
सत्संग की शुरुआत से यानि कि प्रगट गुरुहरि के प्रथम मिलन से अभी तक की पहचान होने तक में
हमारे विचार, हमारी भावनाओं, हमारी इच्छाओं, हमारी ग्रंथियों और स्वभावों में
कहां-कहां कितनी तबदीली आई उसके लिए गुरुहरि की ओर दृष्टि रख कर
हम सभी को अंतर्दृष्टि का महोत्सव मनाना है।
उसकी फलश्रुतिरुप आपको नए वर्ष की शुभेच्छा-अभिनंदन भेजते हैं।
सो सभी बल में रह कर
भगवत्स्वरुप संत की ही अनुवृत्ति के मुताबिक का जीवन जिया जाए
और
सभी को जीतेजी अक्षरधाम का दिव्य सुख प्राप्त हो
उसके लिए दृढ़ संकल्प करना–यही अभ्यर्थना !
मानवजाति के विकास क्रम में
मानव की उर्मियाँ, भावनाएँ और अलग-अलग तीव्र वृत्तियों का शुद्धिकरण होते-होते
उसका मन, बुद्धि, चित्त और जीव आध्यात्मिक विकास को पाया तो जरुर।
श्री वल्लभाचार्य, श्री निम्बार्काचार्य, श्री शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य जैसे दार्शनिकों
तथा
ईसा मसीह, जरथोस, महम्मद, कोन्फयुस्कीयस, भगवान रामचंद्र, श्री कृष्ण, महावीर, बुद्ध,
रामकृष्ण परमहंस, श्री अरविन्द और श्री रमण महर्षि जैसे दिव्यज्योतिर्धर
जीवन परिवर्तन का ऐसा कार्य करने देश और विदेश में अलग-अलग काल में
उनका विशिष्ट मिशन-उद्देश्य लेकर अवतरित भी हुए।
उन सभी के पास अपनी-अपनी निजी और अनोखी सर्जनकारी चेतनवंती दृष्टि भी थी।
परंतु जब हम सोच-समझ कर चेतना के विकासक्रम को देखते हैं तब यूं स्पष्ट लगता है कि–
ये धर्म, सम्प्रदाय और संस्थाओं ने ऐसा निश्चयात्मक दिव्य बदलाव और दृष्टि सहज नहीं बनाई, जिससे कि
प्रेम, निष्कामभाव, निर्मानीभाव, निर्भयता, सरलता, सहिष्णुता, समभाव, सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य जैसे दिव्य गुण
सभी के लिए सुलभ-श्रेयकर बन कर
जीवन को सक्रिय रीत से जीवंत और समृद्ध बना पाएं।
यूं, भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक दृष्टि को प्रकट करने वाले अधिमनस की भूमिका के सिद्धपुरुष और अवतार
भिन्न-भिन्न समय और जगह पर अपने आविर्भाव व अवतरण से
एक दिव्य सनातन भावात्मक माहौल का सर्जन तो कर गए;
लेकिन साथ-साथ मूल अज्ञान या अविद्या या आसुरी तत्त्वों का बल भी
उतना ही समानरुप से निकल न गया हो ऐसा स्पष्ट लगता है।
संभव है कि– सतत् और अखंड जाग्रतता, सचेतता व सावधानी के अभाव के कारण
जड़प्रकृति की वो वृत्तियाँ मजबूत बन कर सिद्धपुरुषों को भी आध्यात्मिक पतन में डाल देती हों
और
विपरीत देश, काल, क्रिया और कुसंग के कारण विषम परिस्थिति या प्रसंगों में
ऐसे सच्चे ज्योतिर्धरों को भी भस्म करके जीवन परिवर्तन के कार्य को अत्यंत कठिन बनाती हों।

श्री सहजानंदस्वामी के पृथ्वी पर प्रगटीकरण से
इस समस्या को-इस धार्मिक पहेली को एक क्रांतिकारी व नया ही मोड़ देने के लिए
साकार ब्रह्म ने बहुत ही स्पष्टतापूर्वक और निश्चयात्मक रुप से अग्रसर हुए 200 ब्रह्मविधा के धारक संतवर्ग को तैयार किया और
चैतन्य के उत्थान का वह अमर वारसा ब्र.स्व. योगीजी महाराज ने संघनिष्ठा से
एक सम्यक् ज्ञान व सम्यक् दर्शन के रुप में हमारे लिए सहज और सुलभ बनाया।
मन शांत होकर अमन बने और समन भी बने, परंतु **'सम्यक् दिव्य दर्शन के सिवा जीव ब्रह्मरुप हो सकता ही नहीं'-**
यह बहुत ही पक्की बात महाराज ने वचनामृत लोया 7 और अंत्य. 36 में करी है।
सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन की यह अशक्य और रहस्य की बात- जो अनोखी दृष्टि वाले सिद्धों को भी नहीं मिल पाई, वह केवल प्रत्यक्ष स्वरुप के प्रसंग से और ऐसे गुणातीत पुरुष के अनुग्रह से हमें कुछ-कुछ समझ में आई है।
तो,
भूतकाल के वे मूल्यांकन, भिन्न-भिन्न दृष्टि और दृष्यों को विलीन करके
ऐसे अनुभवी एकांतिकों के प्रसंग से स्थूलभावों में से साक्षीभाव में प्रवेश करके-
साक्षी के भी साक्षी और दृष्टा के भी दृष्टा ऐसे साकार ब्रह्म की ओर ही दृष्टि रख कर उनके प्रति ही वफादार रह कर
अनंतता की दृष्टि को पाकर 'सम्यक् दर्शन' जो कि–
हमारे जीवन का परिवर्तन करके भगवान का अपरिमित और अनंत जीवन का सुख, शांति और आनंद देता बने-
उसमें प्रवेश करके सक्रिय और सचेतन रुप से हम पल-पल आनंदमय जीवन जीएं
यही गुणातीत के इस प्रागट्य दिन की यह सनातन स्वरुपों के चरणों में वंदना और प्रार्थना !

(1971 की श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका के सौजन्य से)

यूं तो दीवाली से पहले आएगा दशहरा ! सर्वविदित है कि भगवान राम ने पृथ्वी पर आसुरी शक्ति का विनाश करने धरती पर अवतरण लिया था और इसी हेतु दशहरे के दिन रावणरुपी आसुरी तत्त्व को समाप्त करके विजय प्राप्त करी थी। लेकिन आध्यात्मिकता में इस दिन का महत्त्व यह है कि हमारे भीतर छुपे हठ, मान, ईर्ष्या जैसे आंतरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना ! इससे भी अधिक गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर गुरुहरि योगीजी महाराज ने 'दशहरा' के दिन प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी को पार्षदी दीक्षा देकर इस बात का स्पष्ट संकेत दिया कि हमारी विजय निश्चित ही है ! और... गुणातीत समाज के मुक्तों को अनुपम भेंट देने अपने लाडले मानस पुत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को 'शरद्पूर्णिमा' के मंगलकारी दिन पर भागवती दीक्षा दी। 'शरद्पूर्णिमा' तो गुरु गुणातीत का प्रागट्य दिन होने के कारण अपने आप ही सांकेतिक रुप लिए हुए थी। प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी आज अपनी साधुता के गुणों से पूर्णतया सुशोभित होकर गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दिए प्रभु की मूर्ति के सुख का दिव्य प्रसाद देश-विदेश में बांट रहे हैं। आज प. पू. स्वामिजी लाखों भक्तों के हृदय के आसन पर विराजमान हैं... भक्तों के योग व क्षेम का वे वहन कर रहे हैं और... संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों के जीवन को सच्ची दिशा दिखा कर नारायणी सेना का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

सो, प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी को समग्र गुणातीत समाज की ओर से कोटि-कोटि वंदन और अच्छे स्वास्थ्य से खूब वर्षों तक धरती पर दर्शन, सेवा, समागम-मूर्ति का सुख देने के लिए उन्हीं के चरणों में अंतर की प्रार्थना। उनके दीक्षा दिन निमित्त आइए– उन्हीं की एक अनुपम सूझ देती कथावार्ता को आत्मसात करें...

'समझदारी के अंग वाले–बुद्धिप्रधान सेवक को स्वरुप के पास खुद की कान्शियसनेस पिघालने में कठिनाई पड़ती है। सो–जो निर्मानी है वह अतिशय श्रेष्ठ है–वचनामृत मध्य 41 ! मियांजी और रतनजी जैसे दो मुसलमान कैसे कृपादृष्टि में आ गए ? महाराज की आंख के इशारे पर उनका देह घूमता था। वे अहोहोभाव से सेवा करने लग पड़ते थे, दिखावे के लिए नहीं। अहोहोभाव से सेवा कोई करने लग पड़े, तो उस पर संत की दृष्टि पड़ती है। वे दोनों जने घास की गठरीयाँ उठाने की मर्जी समझ गए, तो उन दोनों को सहज प्रसन्नता मिल गई। मर्जी में सहज ही वर्तें तो दृष्टि पड़ने में देर नहीं लगती। सेवा करनी वह–अहोहोभाव से। अपने जीव के कल्याण के लिए और केवल भगवान की प्रसन्नता के लिए। तो प्रसन्न होने में-कृपादृष्टि पड़ने में देर नहीं लगेगी। ऐसी प्रसन्नता योगीजी महाराज ने शास्त्रीजी महाराज की पाई। सतत शास्त्रीजी महाराज के जँचते में-मर्जी में योगीजी महाराज वर्ते। शास्त्रीजी महाराज को परिश्रम नहीं करना पड़ा। यूं स्वरुप जैसे मोड़े वैसा जो मुड़ जाएं, उस पर दृष्टि पड़ती है।

जब बड़े (सत्पुरुष) को विश्वास आ जाए कि यह जीव मेरा ही है और मैं जैसे कहूंगा वैसा करेगा ही, तो फिर हर्जा नहीं

आता। तब भीतर में ठंडक होगी ही। विश्वास का अंग हो उसे सहज अवस्था !

बुद्धिप्रधान अंगवाले को एक तकलीफ रहती है-आडंबर, दिखावा, दंभ रहता है। 'स्व' की कान्शियसनेस, बुद्धि का प्रभाव रहता है। पप्पाजी बुद्धिप्रधान-लेकिन इन चीजों में से उनमें कुछ भी नहीं ! उनकी सहज सरलता ! पप्पाजी को किसी की परवाह ही नहीं थी। खुद ही अंतर्दृष्टि करते, मानते और वर्तते। पहले खुद ही प्रभुमय जीवन जीते और बाद में ही किसी को कुछ कहने की शुरुआत करते।

बुद्धिप्रधान सेवक को खुद के स्वधर्म को पक्का करके स्वरुप को प्रसन्न करना पड़े। चाहे किसी भी अंगवाले हों, लेकिन हमें हमारे एकांतिक संत के पास संपूर्ण निराकार होना ही पड़ेगा। उसके पास हमें संपूर्ण पिघलना ही पड़ेगा।

चाहे कोई भी अंगवाले हों, खुद के एकांतिक संत के पास-निराकार होकर पिघल कर, वे चाहें वैसे मुड़ जाने की, जहां रखें वहां रहने की, जैसा कहें वैसा करने की, स्थूलभाव से मन को और देह को उनकी मर्जी में रखने की आदत या रुचि रखेंगे तो उन्हें प्रसन्न हुए बिना चारा नहीं रहेगा।

और हमें भी देर-सबेर यूं निराकार होने की, पिघल जाने की राह पर जाए बिना छुटकारा ही नहीं। बड़े पुरुष के पास बुद्धि का गरुर रखे बिना, आडंबर, दंभ, खुद की होशियारी का मान रखे बिना, दिखावा किए बिना रसबस होना ही पड़ेगा। बुद्धिप्रधान सेवक ज़बरन अपने मन को ऐसे ढाल दें-ज़बरन स्थूलभाव से आत्मा में रहने का ढाँचा बना लें, तो संत को प्रसन्न हुए बिना चारा ही नहीं। स्थूलभाव से रसबस होकर जैसे संत मोड़े वैसे मुड़ कर उन्हें प्रसन्न करने की आदत डालनी ही पड़ेगी।

खुद खो जाएंगे तभी दूसरे को कन्डक्ट कर सकते हैं। माँ होना आसान नहीं है। हम उदास नहीं हो सकते। प्रार्थना ही करनी पड़ती है। स्थूलरुप से हम ऐसे रसबस हो जाएं, निराकार हो जाएं, पिघल जाएं। जहां रखें वहीं आनंद में-अक्षरधाम में रहते हो जाएं यही प्रार्थना !'

—प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी
(ज्ञान शिविर, दि.26.5.71)

अन्नकूटोत्सव...

27 अक्तुबर, 2000. शुक्रवार की सुबह 11:45 को '*ताड़देव*' में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरुपों की मूर्तियों को वार्षिक महाभोग लगा कर अन्नकूट की आरती होगी...

इस मंगलकारी अवसर पर सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

—योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 24.10.2000	मंगलवार	– धनतेरस
(2)	दि. 26.10.2000	गुरुवार	– दीपावली, शारदा पूजन
(3)	दि. 27.10.2000	शुक्रवार	– अन्नकूटोत्सव
(4)	दि. 29.10.2000	रविवार	– भैयादूज
(5)	दि. 1.11.2000	बुधवार	– लाभ पंचमी
(6)	दि. 7.11.2000	मंगलवार	– प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393